ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-11* December- 2020
Innovation The Research Concept

वैष्णव धर्म के मूर्तिशिल्पों का अंकन

Sculpting Vaishnavism Sculptures

Paper Submission: 15/12/2020, Date of Acceptance: 26/12/2020, Date of Publication: 27/12/2020

शालिनी भारती
विभागाध्यक्ष,
चित्रकला विभाग,
राजकीय कला महाविद्यालय,
कोटा विश्वविद्यालय,
कोटा, राजस्थान, भारत

सुनिज़ा कुमारी
शोध छात्रा,
चित्रकला विभाग,
राजकीय कला महाविद्यालय,
कोटा विश्वविद्यालय,
कोटा, राजस्थान, भारत

सारांश

वैष्णव सम्प्रदाय, भगवान विष्णु और उनके स्वरूपों को आराध्य मानने वाला सम्प्रदाय है। वैष्णव सम्प्रदाय में श्री विष्णु जी के 24 स्वरूपों व दस अवतारों में उनके पहनावे व उनके द्वारा धारण आयुध को ध्यान में रखकर इस शोध को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुत शोध की महत्ता को दृष्टि गोचर करते हुए इस मार्ग से अधिक से अधिक लोगों तक यह जानकारी प्रदान करने का मेरा प्रयास है। शैक्षणिक पृष्ठभूमि पर किस–किस प्रकार से अध्ययन किया जा सकता है तथा वर्तमान में वैष्णव सम्प्रदाय में विष्णु के रूपों और अवतारों के आधार पर निर्मित प्रतिमाओं का अध्ययन किया जा सकता है तथा वर्तमान में वैष्णव सम्प्रदाय में विष्णु के रूपों और अवतारों के आधार पर इसी महत्ता पर यह शोध आधारित है। विष्णु की प्राप्त प्रतिमाओं का अंकन व मुद्राओं का अध्ययन ही शोध का मुख्य बिन्दु ही मेरे शोध का प्रस्तुति करण है।

Vaishnavism is a community that considers Lord Vishnu and his nature to be adorable. In the Vaishnava sect, 24 forms and ten incarnations of Shri Vishnu have been tried to present this research keeping in mind their attire and the armament they hold. It is my endeavor to provide this information to as many people as possible from this route, reflecting the importance of the research presented. How can one study on the educational background and in the present day Vaishnava cult can study statues made on the basis of the form and incarnations of Vishnu and in the present Vaishnava sect, it can be studied on the basis of the form and incarnations of Vishnu. This research is based on importance. The main point of research is the presentation of my research, the marking of the received statues of Vishnu and the study of postures.

मुख्य शब्द : अनुभुती, स्वाभाविक, अमूर्त रूप, अभिव्यक्त, कलात्मकता, उपास्य, आयुध, पद्य (कमल), सप्तशाखाओं, सृजनकर्ता, अस्त्र–शस्त्र, आभामण्डल, गठनशिलता, उत्कीर्ण, चतुर्हस्त प्रतिमा, सौद्देश्य, सुव्यवस्थित, सुनियोजित, परम्परागत, विषयगत विविधता, विवेचन, विश्लेषणात्मक, आकृति विमूलक विवेकता, अलंकरणात्मक, स्मारक, जनजाग्रति, चेतना जाग्रत।

Experiential, natural, intangible, expressive, artistry, worship, armament, verse (lotus), saptashakhaas, creators, weapons, hallucinations, constitution, carve, quadrangular statues, purposeful, well-organized, planned, traditional, thematic variety, deliberation, Analytical, shape-oriented rationality, ornamental, memorial, public awareness, consciousness awakening.

प्रस्तावना

मनुष्य ने जब इस धरा पर जन्म लिया तभी से विभिन्न कलाओं का प्रारम्भ माना गय है। यही विभिन्न विशेषज्ञों की मान्यता रही हैं, क्योंकि मनुष्य जंगलों में निवास किया करता था तथा वहां से उसने प्रकृति के अनन्त सोन्दर्य की अनुभूति की। प्रकृति के अनेक स्वाभाविक तत्वों में सौन्दर्य की अधिष्ठात्री देवी को अमूर्त रूप में देखा। देवी के उस अमूर्त रूप को प्रदान करने के लिए पाषाण पत्थरों को गढ़ने का प्रयास किया। कभी रेखांकन तो कभी निराकार पत्थरों को आकार देकर अपने मन की भावनाओं को अभिव्यक्त किया और ऐसा करने में मनुष्य सफल भी हुआ। हरी–भरी प्राकृतिक छटाओं के मध्य रहते हुए मनुष्य ने नदियों के तट, गुफाओं व पहाड़ों की चट्टानों को अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए उपर्युक्त कार्यस्थल समझ कर अपनी भावनाओं को व्यक्त किया और यह स्थल मनुष्य की कलात्मकता एवं बौद्धिक विकास के साथ मुखर हो उठी।

मनुष्य ने अपनी भाचनाओं को मूर्ति या प्रतिमा के रूप प्रकट करना सिन्धु सभ्यता के समय से ही प्रारंभ कर दिया था और यह क्रम सिन्धु घाटी सभ्यता की कला से हो कर निरन्तर आगे बढ़ता ही गया। सिन्धु सभ्यता के बाद मौर्यकाल, शुंगकाल (शुंगसा तवाहन काल) कुषाणकाल गुप्त काल और अन्त में भारतीय मन्दिर के रूप में यह क्रम चलता रहा। इसी क्रम में भारतीय मन्दिरों में राजस्थान के मन्दिर विश्वविख्यात है। राजस्थान के बांसवाड़ा में अर्थूणा के मन्दिर की मूर्तिकला को पाँच श्रेणियों में विभाजित किया गया है।

1. शैव
2. वैष्णव
3. जैन से सम्बन्धित
4. दिगपालों की मूर्तियाँ
5. अप्सरा आदि की मूर्तियाँ।

वैष्णव सम्प्रदाय

ईस्वी सदी से तीसरी शताब्दी पूर्व तक सम्पूर्ण भारत में वैष्णव धर्म का प्रचार हो चुका था। भारत में अनेक राजपुरूषों एवं अनेकों विदेशी राजाओं ने इस धर्म से प्रभावति होकर वैष्णव धर्म को अपनाया। भगवान विष्णु को परम उपास्थ मानकर गरूड़ध्वजों की स्थापना विभिन्न स्थानों पर की गई। मध्ययुग के गुप्तकाल में वैष्णव सम्प्रदाय की प्रमुखता रही और इसी समय यह सम्प्रदाय भक्ति मार्ग का पोषक रहा।

शुंगकाल से मन्दिरों में वैष्णव सम्प्रदाय के सम्बन्धित विष्णु, वासुदेव, रामकृष्ण आदि रूप में प्रतिमा प्रतिष्ठित की जाने लगी। हिन्दू धर्म में वैष्णव सम्प्रदाय की प्रमुखता रही है। वैष्णव सम्प्रदाय में भगवान विष्णु को अलग–अलग रूपों में पुजा जाता है। केशव

1. विष्णु
2. वामन
3. नृसिंह
4. नारायण
5. माधव अवतार
6. गोविन्द
7. वासुदेव
8. कृष्ण
9. पद्मनाभ
10. मधुसूदन
11. विक्रम
12. श्रीधर
13. ऋषिकेश
14. दामोदर
15. प्रद्युम
16. अनिरूद्ध
17. अधोछत्र
18. पुरूषोत्तम
19. अच्युत
20. जनार्दन
21. उपेन्द्र
22. संकरषण
23. हल।

विष्णु के चौबीस रूपों में भगवान के लक्षण तथा वेशभूषा एक–सी प्रतीत होती है लेकिन उनके विभिन्न हाथों में अनेक द्वारा धारण किये गये आयुधों की भिन्नता के आधार पर उनके रूपों की पहचान की जाती है। जैसे –

केशव

इस रूप में विष्णु के डपरी दाहिने हाथ में शंख तथा निचले दाहिने हाथ में चक्र है और बांये ओर के ऊपरी हाथ में पद्म (कमल) तथा निचले बाये हाथ में गदा है।

नारायण

विष्णु के इस रूप में ऊपरी दाहिने हाथ में पद्म (कमल) होता है। निचले दाहिने हाथ में गदा व ऊपरी बायें हाथ में शंख व निचले बायें हाथ में चक्र धारण किया हुआ दिखाया है।

माधव

विष्णु को इस रूप में ऊपरी दाहिने हाथ में चक्र व निचले दाहिने हाथ में शंख तथा ऊपरी बायं हाथ में गदा व निचले बांध हाथ में पद्म (कमल)।

गोविन्द

विष्णु के गोविन्द रूप में ऊपरी दाहिने हाथ में गदा व निचले दाहिने हाथ में पद्य और ऊपरी बायं हाथ में चक्र व निचचे बांय हाथ में शंख धारण किये दर्शाया है।

विष्णु

इस रूप में विष्णु ने ऊपरी दाहिने हाथ में पद्म (कमल)व निचले दाहिने हाथ में शंख और ऊपरी बायें हाथ में गदा व निचले बायें हाथ में चक्र दिखाया है।

मधुसूदन

मधुसूदन के इस रूप में विष्णु ने ऊपरी दाहिने हाथ में शंख व निचले दाहिने हाथ में पद्म (कमल) तथा ऊपरी हाथ में चक्र व निचले बायें हाथ में गदा धारण किये दिखाया है।

विक्रम

विक्रम स्वरूप विष्णु के इस रूप में ऊपरी दाहिने हाथ में गदा व निचले दाहिने हाथ में चक्र तथा ऊपरी बायें हाथ में पद्म (कमल)व निचले बायें हाथ में शंख धारण करा दिखाया है।

वामन

इस रूप में ऊपरी दाहिने हाथ में चक्र, निचले दाहिने हाथ में गदा, ऊपरी बायें हाथ में शंख, निचले बायें हाथ में पद्म (कमल) धारण किये है।

श्रीधर

श्रीधर के ऊपरी दाहिने हाथ में चक्र व निचले हाथ में गदा, ऊपरी बायें हाथ में पद्म तथा निचले बाये हाथ में शंख।

ऋषिकेश

ऊपरी दाहिने हाथ में चक्र, निचले दाहिने हाथ में पद्म, ऊपरी बायें हाथ में गदा, निचले बायें हाथ में शंख।

दामोदर

ऊपरी दाहिने हाथ में शंख, निचले दाहिने हाथ में गदा, ऊपरी बायें हाथ में पद्म, निचले बायें हाथ में चक्र।

संकरषण

ऊपरी दाहिने हाथ में शंख, निचले दाहिने हाथ में पद्म, ऊपरी बायें हाथ में गदा, निचले बायें हाथ में चक्र।

वासुदेव

ऊपरी दाहिने हाथ में शंख, निचले दाहिने हाथ में चक्र, ऊपरी बायें हाथ में गदा,निचले बायें हाथ में पद्म।

विष्णु के इन चौबीस रूप के अलावा हिन्दू धर्म ग्रन्थों में विष्णु के दस अवतारों को बखान किया गया है। विष्णु ने यह अवतार अलग–अलग समय काल में धारण किये। विष्णु के यह दशावतार इस प्रकार है–

मत्स्य अवतार

विष्णु ने यह अवतार समुद्र में खोये हुए वेदों को खोज निकालने के लिए धारण किया था

कूर्म अवतार

देवताओं और असुर द्वारा किये गये समुद्र मंथन के समय विष्णु ने कुर्म अवतार (कच्छप अवतार) ग्रहण कर पर्वत को अपनी पीठ पर धारण किया था।

वराह अवतार

विष्णु ने यह अवतार पृथ्वी को समुद्र से वापिस लाने के लिये धारण किया था

नृसिंह अवतार

विष्णु का यह अवतार प्रतिमा के दृष्टिकोण से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। विष्णु ने यह अवतार हिरण्यकश्यप का वध करने के लिए धारण किया था। इस अवतार में विष्णु का मुख सिंह का और शेष शरीर नर का है।

वामन अवतार

राजा बलि के द्वारा किये जा रहे धार्मिक अनुष्ठानों व उसकी बढ़ती हुई शक्ति को विराम देने के लिए, देवताओं के अनुरोध पर विष्णु ने वामन अवतार धारण किया शिल्प में इसे ''त्रिविक्रम रूप'' में दिखाया गया है।[1]

परशुराम अवतार

विष्णु ने परशुराम अवतार दोषी क्षत्रियों को दण्ड देने के लिए तथा क्षत्रियों की हिंसात्मक प्रवृति के दमन हेतु यह अवतार धारण किया था।

राम अवतार

विष्णु ने यह अवतार लंका के राजा रावण व राक्षसों और दुष्टों का संहार करने के लिए धारण किया था।

कृष्ण अवतार

इस अवतार में कृष्ण की विभिन्न लीलाऐं शिल्प व स्थापत्य में देखने को मिलती है जो शिल्प व स्थापत्य कला का बेजोड़ उदाहरण है। इनकी लीलाओं में गोवर्धनधारी कृष्ण, कालियादमन, बालरूप कृष्ण, सारथी कृष्ण कला का उत्कृष्ट उदाहरण है।

बलराम

भगवान विष्णु का एक रूप था अवतार बलराम के रूप में देखने को मिलता है शिल्प कला में हलधर बलराम की प्रतिमाऐं देखने को मिलती है।

कल्कि अवतार

यह अवतार विष्णु द्वारा भविष्य में धारण किया जायेगा इस अवतार में भगवान विष्णु घोड़े पर सवार तथा एक हाथ में नग्न तलवार धारण किये हुए अवतरित होगें।

विष्णु के इन दस अवतारों व चौबिस रूपों को कहीं ना कहीं शिल्प व स्थापत्य कला में स्थान मिला है तथा इनके अलावा भी शिल्प कला में विष्णु की अद्‌भुत प्रतिमाऐं दिखने को मिलती है जो शिल्प कला का बेजोड़ उदाहरण है।

विष्णु की एक ऐसी ही प्रतिमा राजस्थान के कोटा शहर से 51 किलोमीटर दूर चम्बल तथा बामिनी नदी के संगम से पाँच किलोमीटर दूर स्थित बाड़ौली मन्दिर से प्राप्त हुई।

बाड़ौली मन्दिर

यह मन्दिर शैव धर्म से सम्बन्धित है। यह मन्दिर शैव मत का एक धार्मिक केन्द्र था तथा यहाँ पर शिव परिवार के साथ–साथ अन्य देवताओं के मन्दिर भी बने है। बाड़ौली के इन मन्दिरों को प्रकाश में लाने का श्रेय सन् 1821 ई. ''जेम्स टॉड' को जाता है। इनके पश्चात् इन मन्दिरों का उल्लेख 'फर्ग्यूसन' ने भी किया। बाड़ौली मन्दिर समुह में कुल छोटे–बड़े 9 मन्दिर है। 9 मन्दिरों में से दूसरे नम्बर का मन्दिर विष्णु मन्दिर है जो वैष्णव सम्प्रदाय से सम्बन्धित है।

शेषशायी विष्णु की प्रतिमा मन्दिर संख्या–2 के गर्भगृह से प्राप्त हुई। इस खण्डित मंदिर के तलछन्द में गर्भगृह त्रिरथ है। इ गर्भगृह का प्रवेश द्वारा सप्तशाखाओं से युक्त है। जिनमें से पद्‌मशाखा के अतिरिक्त सभी शाखाऐं सादी है। इसी गर्भगृह में शेषशायी विष्णु की प्रतिमा स्थापित थी जो वर्तमान में कोटा संग्रहालय में संरक्षित हैं।[2]

शेषशायी विष्णु

हिन्दू धर्म ग्रन्थों में पुराणानुसार विष्णु परमेश्वर के तीन मुख्य रूपों में से एक रूप हैं। पुराणों में त्रिमूर्ति विष्णु को विश्व का पालनहार कहा गया है। त्रिमूर्ति के अन्य दो रूप ब्रह्मा और शिव है। ब्रह्मा को विश्व का सृजनकर्ता माना जाता है और वहीं शिव जी को संहारक माना गया है।

पुराणानुसार विष्णु की पत्नी लक्ष्मी हैं, कामदेव विष्णु के पुत्र है। विष्णु का निवास क्षीर सागर में हैं उनकी नाभि से कमल उत्पन्न होता है जिसमें ब्रह्मा जी स्थित हैं। इस शेषशायी विष्णु की प्रतिमा में लक्ष्मी देवी को विष्णु के चरणों आसीन दिखाया गया है जो आभूषणों से सुसज्जित है। विष्णु जी इस प्रतिमा में शयन मुद्रा में लेटे है तथा ऊपरी बायें हाथ पर अपने सर का भार संभाले हुए है। ऊपरी शाखा में चावर धारण किये हुये सेवकों को दिया गया है जो भगवान को चावर से हवा करते प्रतीत होते है।

ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-11* December- 2020
Innovation The Research Concept

भगवान विष्णु के इस मुद्रा में उनके हाथ में धारण किये गये आयुध है– नीचे वाले बाएं हाथ में पद्म (कमल), अपने नीचे वाले दाहिने हाथ में गदा (कौमोदकी), ऊपर वाले बाएं हाथ में शंख (पांचजन्य) और अपने ऊपर वाले दाहिने हाथ में चक्र (सुदर्शन) को धारण किये दिखाया गया है।

भगवान विष्णु के मुख्यतः अस्त्र है। शंख (पांचजन्य), चक्र (सुदर्शन), गदा (कौमोदकी) और पद्म (कमल), धनुष, तलवार, नंदक और फारस परशू।

नरसिंह प्रतिमा

यह रूप भगवान विष्णु का रौद्र रूप है तथा दस अवतारों में से यह अवतार चौथा है। जैसा कि नाम से प्रतीत होता है। नरसिंह नाम के अनुसार भगवान का आधा रूप नर (मनुष्य) और आधा रूप सिंह (शेर) का है। इस प्रतिमा में भगवान मुख सिंह के रूप में और शेष शरीर मनुष्य के रूप में दिखाया है।

राक्षस हिरण्यकश्यप ने भगवान ब्रह्मा की तपस्या कर अमरता का वरदान प्राप्त किया। जिसके अनुसार उसे कोई न दिन में या रात में, न मनुष्य या पशु, न आकाश में न धरा पर तथा न किसी शस्त्र से न अस्त्र से उसकी मृत्यु हो सके। इन्हीं सभी बातों को ध्यान में रखते हुए भगवान आधे नर व आधे सिंह के रूप में भगवान विष्णु ने हिरण्यकश्यप को अपनी गोद में लेटा कर उसका संहार किया है। ऐसा हिरण्यकश्यप को प्राप्त वरदान अनुसार हुआ है। न दिन में न रात में यानी संध्या काल के समय, न आकाश में न धरती पर यानी अपनी गोद में लेटाकर, न किसी अस्त्र से न शस्त्र से यानी अपने नाखूनों और हाथ से हिरण्यकश्यप का वध किया है।

वामन प्रतिमा

वामन अवतार भगवान विष्णु का ही एक अवतार माना जाता है। भगवान विष्णु ने यह अवतार लेकर राजा बलि को पाताललोक का राजा बनाया था। जिसके द्वारपाल वह स्वयं बने थे।

छोटे बौने ब्राह्मण वामन अवतार की इस प्रतिमा में भगवान विष्णु को रूप की गठन शिलता में दिखया है इनको दक्षिण भारत में उपेन्द्र के नाम से भी जाना जाता है। वामन के सर पीछे आभामण्डल है और इस आभामण्डल के दोनों ओर ताकों में क्रमशः गणेश और वीणाधारिणी उत्कीर्ण है इनके केश सज्जा भगवान बुद्ध के केश जैसी है। वामन प्रमिमा में चतुर्हस्त प्रतिमा है जिसमें बायें ओर का ऊपरी हाथ खण्डित है तथा नीचे के हाथ में एक मोटे मोती वाली माला है। ब्राह्मण रूप में अवतरित होने के कारण जनेऊ धारण किय हुआ है।

शोध के उद्देश्य

किसी कार्य को करने से पूर्व उसे करने के कारण का निर्धारण उद्देश्य कहलाता है जिससे कार्य सुव्यवस्थित एवं सुनियोजित रू५ से हो सके जीवन के सभी कार्य सौद्देश्य एवं सुनियोजित रूप से हो सके जीवन के सभी कार्य सौद्देश्य होते है उद्देश्य का निर्धारण कार्य की निरंतरता एवं गति की गरिमा प्रदान करता है। उद्देश्य के बिना जीवन दिशाहीन हो जाता है।

''उद्देश्य पूर्व निर्धारित साध्य होता है जो किसी कार्य का मार्गदर्शन करता है।''

– वी. गुड

1. प्रस्तुत शोध कार्य के अन्तर्गत हिन्दू मूर्ति शिल्पों के परम्परागत कलात्मक स्परूपों और संस्कृति का परिचय प्रदान करना।
2. शोध अध्ययन में हिन्दू मूर्ति शिल्पों को विषयगत विविधता का विवेचन किया गया है।
3. हिन्दू मूर्ति शिल्पों के विभिन्न स्वरूपों का विश्लेषणात्मक विवेचन करना।

4. शोध कार्य में हिन्दू मूतिशिल्प को आकृति विमूलक विवेचना एवं अंलकरणात्मक रूपों का अध्ययन।
5. क्षेत्रिय और सामाजिक स्तर पर हिन्दू मूर्तिशिल्प के स्मारकों के प्रति जनजाग्रति व चेतना जाग्रत करना है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *भारतीय मूर्तिकला एवं स्थापत्य कला, पृ.सं.438*
2. *भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, पृ.सं. 555–556*
3. *भारतीय मूर्तिकला एवं स्थापत्यकला पृष्ठ संख्या 438*
4. *भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास पृष्ठ संख्या 555–556*
5. *शिवपुराण की दार्शनिक धार्मिक समालोचना*
6. *भारतीय मूर्तिकला*
7. *मध्यकालीन भारतीय प्रतिभा लक्षण*
8. *भारतीय मूतिकला की कहानी*